बुद्बुद

ज्ञान-खानि का रत्न नहीं हूँ, और न काव्यकला गुम्बद ।
मैं तो कोरा खार सिन्धु के जल का हलका-सा बुद्बुद ॥

× × ×

हीं जो व्यथा-कथा को जग के उर में लिख-जाऊँ ।
त हूँ नहीं स्वर्ग-सुन्दरियों में आदर पाऊँ ॥
खारे जल का बुद्बुद रीता आता जाता हूँ ।
ाली जग में आकर क्षणभर सूने में लय पाता हूँ ॥

हरिभाऊ उपाध्याय